

८८ लक्ष्मी स्तोत्र ओम् श्री वीर्ये

ता २

ASHA ARCHIVES 3177

रथानेहा गत्यस्म न गच्छयाथ
वा सस्म न स गच्छयाथ
कामा रव रुया ॥ ॥ ॥ ॥

नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप

नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप
नृप नृप नृप नृप नृप नृप

वसुधा शिवाय नमः ॥ नमः शिवाय नमः ॥
पुनः शिवाय नमः ॥ नमः शिवाय नमः ॥

४२६

१॥ विष्णवे नमः ॥ प्रणम्य
मङ्गलार्थं न्यासः ॥ ओ
नाना रक्षसि ल ॥ मङ्गलार्थं
अथ ॥ १॥ वृद्धं वृद्धं वृद्धं
मङ्गलार्थं ॥ अङ्गि मङ्गलार्थं ॥
॥ मङ्गलार्थं वृद्धं ॥ मङ्गलार्थं
वृद्धं ॥ सफ मङ्गलार्थं ॥ योजय
न न लं ॥ गववायु ॥ भ्रा
कृष्ण नमः सरुवायरा ॥
विगव नञा नासीक ॥
अथ ॥ वृद्धं वृद्धं ॥ वृद्धं
अज्ञानं ॥ विष्णु ननागम
सि ॥ नमः सरुवायरा ॥
लोम विलोम ना ॥ यथ
सक मङ्गलार्थं वृद्धं ॥
१० ॥ यज्ञाय वार्ता ॥ अथ ॥
१० ॥ आचमनं ॥ न्यासः
लिकाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ
म्य ॥ गमयत्या न्यास ॥ या
हमयाम ॥ यद्वापवीतज
लनयुक्ता ल्य ॥ गमयत्यु
जयत् ॥ सय ॥ ॐ वं न
जज्ञानं पृथमं पुनस्तादि
सीमतसूत्रं वा वनश्रु
वः ॥ सुवृक्ष उयमा अर्य
विरासतश्च यानि प्रस
तश्च वीयः ॥ अग्निं मूर्द्धा
दिकं ककुत्सतिः पृथिव्या
अर्यं अया १ न ता शसि
जिन्वति ॥ १ सुभ्यवन्दा
गुहादवमं द्वावमं मं
॥ नायक ॥ १ मंदवाः अ
सयत्न ० सुमर्षं महत्तक
गायमहं तं ज्यैष्ठ्याय मह
तं ॥ १ नो १ सुदियाय
॥ १ ममूष्य पृथुमस्ये वि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ज्ञानशब्दाय २

मृडयत्वा ७

मनुष्यामि नागासामा
स्माकं ब्रह्मना ० ना
॥ ॐ ह्यकमयः पुति
हितासनायसकत्रिकं
तिसदमपुमादं। सका
ः स्वयता सा कमीयु
सगुजायुता अस्वयुजा
सगुसदावदवो

पुजायतनत्वं न तांद
तां न्यायाविष्म नूया
दिय निमं चरु वयला
मा रुयं शङ्क नास्तुत्या
मपतया नयादा ॥ तव
वायवृहस्यतल्लुङ्गा
तनकुश्या ० त्यावेहा
महु ॥ अकुशुनेन जस
वर्तमानानि वसं यन्नमृ
तं मेत्यं। हिनेत्यनस
विता नेथ नादवायातिः
एवना नियमन् ॥ ॐ न

॥ ॐ ॥

अमर्ष

मः सक्त वायवमयारुमा
यवनमः गीकनायवमय
स्कनायवनमः शिवायव
शिवतनायवः ॥ शिव
नयदायवीज ॥ ॐ ॥
॥ ॐ ब्रह्मज्ञानं यथमं
पुनस्तु द्विसामगः सुतः
वावेन भ्रावः। सवृक्ष ॥
यमा अस्त्यविष्माः सतग्व
यानिय सतग्व विवः ॥ ॐ
विष्मा नाटमसि विष्मनकु
स्मविष्म सुनसि विष्माकु
वासि वेष्म वमसि विष्मव
त्वा ॥ ॐ नमः सक्त वायवम
यारु वायवनमः गीकना
यवमय स्कनायवनमः
वायव शिवतनायवः। यस्तु
यवीत ॥ ॐ ॥ यस्तु
जयत ॥ ॐ ॥ यस्तु
नमः यस्तु पुजायतनयस्तु
हस्तं पुनस्तु आयुक्तमगुं
भूषास्तु नवातं वाष्टातु
नस्तुस्तु वा ४

श्रावमन॥

प्रतिमं वसुतं यश्चायवात
पुनमस्तु ग ३ ॥ अय ॥ १ ॥
॥ न्यायसिद्धयः ॥

१ नमानमः श्रीपुरुषात्मा
यत्नमानमः श्रीकुरुलयाप
॥ नमानमः श्रीनद्युनन्दनाय
नमानमस्तु ग ३ ॥ अय ॥ १ ॥
॥ न्यायसिद्धयः ॥

दय दयार्कं त्रसदा मयि ॥ त
क्षीयेत धनं देहि वाग्यन
तास्तु मवच ॥ मदो मयस्तु
स्तु ॥ अहिरण्यकजला
वनचन्दनलया ॥ अहिरण्यक
॥ वात्रिनिधः सुतकनि
हन्त मयि पादयुग्मयि
धिसदा ॥ कंकनमलि
तया लिधनं त्रिभुवनं
वभ्रान्तिस्त्वनं ॥ ग्राहि
दया कन गोवर्धनो गक
दीनस्तु हनन्तु रूपया
॥ ३ ॥ कस्तुरिपुष्पं

१ श्रीसावदाय ॥ दिनमाय
नऊनी साययात ४ गि गि
नवसन्त ४ पुननायात ४
कालः कीठ तिगच्छु त्यायु
स्तदपिन मय त्यासावा
युश ॥ रुद्र ॥ अविन्दैरुद्र ॥
विन्दैरुद्र ॥ अविन्दैरुद्र
मूरु मठ ॥ याक सीनि
दिन मत्र ॥ हानति नहि
न कति ॥ रुद्र ॥ रुद्र ॥
॥ १ ॥ वयसि गत क ४
काम वि काम ॥ रुद्र ॥
नीन क ४ कासाज ४ रुद्र ॥
विलि क ४ यनिवार ४ रुद्र ॥
तत्वे क ४ संभत ॥ ३ ॥ रु
द्र ॥ अविन्द ॥ अति लोमु
दित लं रुद्र क ४ रुद्र ॥
याया व नवदु क ४ रुद्र ॥
॥ नमानदिन हियुष्टा सिम्
॥ उदर निमिर्लवदु क ४

नरुष ॥ रुद्र ॥ वि
 न्द ॥ ३ ॥ कर्तृको ह
 कृत आ यान काम
 कुन नी काम तात
 ॥ ति पात्र रूषित स
 र्व म सार सव ल्यका
 सप्त वि रात ॥ रुद्र ॥
 वि द ॥ ४ ॥ मिथ्य कर्षि
 न विन विगय नृा य
 ध्यापु ध्याव वडि नय
 नृ न ख ना ह नाय
 ला क सुदा य कि मर्थ
 कृ य न ॥ रुद्र ॥ क ४ रु
 द्र ॥ वि न्द ॥ ५ ॥ रुद्र
 कृती ना ॥ अं गी गी लि
 न य लि त मू दु द ग न
 दि न जी त रू रू ॥ रुद्र ॥
 गि र दि ला उ ह ॥ ग द
 यि न मू ले त्या सा वा य

४ रुद्र ॥ वि न्द ॥ ॥ ग य
 जी ता ना म स रू मू ॥ ६ ॥
 शी य ति नृ य म ड स रू न
 र्प स रू न स रू म रू ल
 दृ य दी त रु ना य व वि
 रू रुद्र ॥ वि न्द ॥ ७ ॥
 रु ग व डी ता किं चि न्धा
 ना ग म ड ल ल व क
 नि का पी ता स रू क ल्य
 ॥ ८ ॥ सि मू गा न व रू न
 स य मू मा यि क ना ति न
 रू रू ॥ ९ ॥ रुद्र ॥ वि न्द ॥
 ॥ वा ल सा व रू की ग
 स क सु रू द सा व रू
 रू द न क १ रुद्र सा व
 वि न्द ना म म ४ प न म रू
 रू शि का यि न ल रू
 ४ ॥ रुद्र ॥ वि न्द ॥ १०
 या व दृ धा या डू न स



कस्तुवनिजयतिवा
 गारकस्तुदन्त्रजग
 यांजगन्तदह वास
 र्हायुक्तिकापिन
 रुद्रगणविन्द॥९॥
 अथवक्रियुष्टरान
 नातुसममर्षितजा
 ननकेतनशिकान
 तनवासस्तुदयिनम्
 बल्याम्भपाग॥रुद्रगण
 विन्द॥१०॥नात्रीस्तु
 रुतनाशिनिसंयुष्टा
 मायामादननिवस
 पतन्मासगसादिविका
 र्मसिदिविकयवा
 नयान्॥रुद्रगणविन्द
 ॥पुनत्रयिदिवस४पु
 नत्रयितातियुनत्रयि
 पद॥पुनत्रयिमास४
 गक्तुल्यायुक्तीति का

लस्तुदयि।नमूचति
 मायाजाल४॥रुद्रगणवि
 न्द॥११॥पुनत्रयिज्ञनं
 पुनत्रयि मनेर्ह्यपुनत्रयि
 ज्ञननीजठनभयनं
 रुद्रसिम्भनवकुविस्मा
 नकृपयापात्रपादिम्
 गान्॥रुद्रगणविन्द॥
 नूतिगणकत्रायुवि
 नेयित्वादभयुंति
 कास्तुमाय॥॥इतिम४
 गाननेवत्राय॥को
 ठानककाष्टयमा
 धवक्तुःकृष्णानीः
 पिङ्गलसोत्रिमन्द
 नित्यस्तुतायाजय
 तस्वपीछा।तस्मिन्
 मःष्टीनविनन्दना
 य॥१॥नगानत्रुदा

न ७

१ लक्ष्मी की त समुद्र ता
 ज त न यां श्री तं ग धः
 म ष्ट त्री दा सी ह त सम
 रु द व न मि ता वि लाः
 क्क दी पा दू तां ॐ ष्ट
 ल व्व क ठ के वि रु वः आ त ३
 व ष्ट द गं ग म व तां तां
 ले ला क्क क दू वि नि के म त सि डा
 डां वं द मू क न्द प्रिया
 ॥ १ ॥ श्री श्री श्री लक्ष्मीः
 सा र्ग मूर्त्त म ॥ ॥
 ह्य ग म य त य न मः ॥
 मूर ज ही हि ध ना ग म
 ल क्ष्मी क र नि ज व द्धि
 म न सि वि ल क्ष्मी ॥ य
 स र स नि ज क र्मा या

लं वि लं त न वि ना द य
 वि लं ॥ १ ॥ अर्थ म न र्थ
 रा व य नि र्थ ना स्ति तः
 तः स ख ल स गी र्थ ॥ प्र
 ण द पि ध न रा गी र्थि ति
 : स व्व गि ष्ठा वि दि ता न
 तिः ॥ २ ॥ या व द्वा पा
 र्ज न स क स्मा व नि जः
 प ति वा ना त कः ॥ त द
 नू च ज त या ग र्ज न द ह
 वा र्ण का पि न वृ क्ति
 ण ह ॥ ३ ॥ का त व काः
 ना क रू पू णः स मा ना
 य म गी व दि चि तः ॥
 क स्य लं कः कू त आ

यागस्तुल्यविक्रयतादिदयानः॥४॥न
 लिनीदलेमतजलनरुल्लेखनं, तद्वज्रवि
 तमतिशयवयतीतिदिवा। अरि
 मानद्युक्तं, तामं (१) कुरु तं व समस्तं॥
 ७॥ माकुरु धनजनजीवनगर्भं हुन
 तिनिमेषात्कालः सर्वं॥ माया मयमिः
 दमखिलं हित्वा, विष्णुपदित्वं यविः
 शिविदित्वा॥८॥ नाती सुनरुननाः
 शिविवर्गं, इहो माया मोहनिवर्ग
 ॥९॥ तस्मात्सुतसोदिविकारं मनसि
 विविक्तयवार्तवार्तं॥१०॥ सूत्रमः
 दिवतत्रमूलनिवासः, माया रूपाः
 तमजिनं वासः॥ सर्वपात्रग्रहो ग
 र्भागः, कस्यसर्वं न कतीति विना
 ॥११॥ कातवकाका धनद (१) विना,
 इज्जनवालुतनवनिजयना॥ विज
 गतिसकूनसुगतिनका, रुवतिरुव
 क्तवतत्र (१) नीका॥१२॥ कामकाधरा
 रं माहं त्यक्त्वा लानं पश्यति साही॥
 अस्मद्भानविहीनामूरा, कयद्यकु
 वनकेनिरूपा॥१३॥ दिव्यामिन्ना
 सायं धातः, विजिनवर्गोपूनताः
 यागः॥ कालः कीर्तिगद्व्यायुक्त
 दपितमूक्यो मावायः॥१४॥ त्वयि
 मयिवा न्ये कोतिषु, व्यर्थं कथं
 सिमर्थं सहिष्णुः॥ रुवसमविलसर्व

१२, वाक्कसियद्युविष्णुपदली॥१२
 ॥ कुरु नर्गमसागतमनं, वन
 पत्रियर्थमथवादानं॥ कुरु नविही
 नाः सर्वमनन, मुक्तिरुवतिजम
 गतिन॥१३॥ द्वादशायसीटिका
 शिव (१) षः, विद्या (१) कथितायु
 यदशः॥ नृपनिवकतीति विनक
 जयद्यकननकमसर्ष॥१४॥
 ॥१५॥ अहंकारावर्था विनयितीमा
 रुमर्गं नामानि (१) कानि सन्नि
 कीनि॥ यदिमलिरुवने शुद्धा शुद्धाः
 रुम्यन्तीति सर्वं शुद्धकविशिः॥ वद
 शमस्तस्यासेतानि शमि, कथयार्क
 यया (१) धर्मागन॥ ॥१६॥

न

जोगे रे गानयं सुखे स
 यनयं विते विनृभृज
 यं, गाने दे नृभृजयं व सुखि
 पुनयं सस्वविवा नृभृजयं
 रुपे नरायानयं, शास्त्रे
 वाद नयं सुखे लभ
 यं कायेकतां ता इयं
 सब वस्तु नयान्वितं सुखि
 नृभृज वैराग्यमेवा नयं॥

मीनः पञ्चतनाशयन्।

स्मरुवेऽनननदवस्म
 दमासननमःपु
 थोनमः॥विष्णुस्याद
 वस्मरुवेऽनननदस्या
 यादाद्यैःनमः॥विः
 पुपादकनघृष्टुकिः
 यमानापिआननःसः
 कनःकनविक्रयःसका
 कम्मकनकनधवाः
 ॥काश्यपःसमः
 अमुकाः॥असःसोन
 सेनीकमाद्रुः॥पितृपि
 तामहःप्रयितामहस्य
 शिलकृताः॥दमास
 नसकाः॥पितृपुष्यस्य
 कायितामहपुष्यस्य
 प्र॥पितामहपुष्य

3177

ASHA ARCHIVES

हि

उक्तं नमो भगवते वासुदेवाय

यश्च मया नमः ॥ गङ्गा ॥
 नायकं दयाय नमः ॥ गङ्गा ॥
 धनाय सिनस नमः ॥ गङ्गा ॥
 धनाय गिरवाय नमः ॥ गङ्गा ॥
 शुभनाय कवचानमः ॥ गङ्गा ॥
 आधनाय नरुपाय नमः ॥ गङ्गा ॥
 मङ्गा ॥ धनाय अमुनायः
 नमः ॥ ॐ बुद्ध नमः ॥
 ध्वज ॥ नृदाय नमः ॥ सदाः
 निवाय नमः ॥ वनूह मूर्ते
 यत्तु ॥ चन्दनाय नमः ॥
 मङ्गा ॥ वनूह मूर्ते यत्तु यत्तु
 तुर्क नमः ॥ ॐ बुद्ध नमः ॥
 ॥ विष्णु वर ॥ नृदाय ॥ सः
 दानिवाय ॥ वनूह नमः ॥
 दिन ॥ आत्मन सिद्धि यत्तु
 ॥ आत्मन वन्दन नमः ॥ अ
 त्मसि न जियुष्य नमः ॥ आ
 त्मसनाय नमः ॥ आत्मन

गङ्गा मया नमः

अश्वमेध नावकाया लखास
आत्मनूजा

मूर्तेय नमः ॥ ॥ पुष्पा
 रिमूय नमः ॥ पुष्पा
 लज्ज ॥ सक द्यावदप
 लज्ज ॥ मृगम कारव नमि
 नो वक्र वाकासन द्वाप
 दंता ॥ न सिमानस त
 पिताता कुरु कुरु वाक्म
 हपवद यावता ॥ पश्यः
 तदिन नमः ॥ नमः ॥ गङ्गा
 वसीदध ॥ गङ्गा रुमि
 गङ्गा ॥ आत्मा ॥ आत्मा दव
 गङ्गा ॥ धर्मा ॥ तास्या वयन
 मस्कार ॥ ततः अर्धयुव
 र्कत ॥ गङ्गाये नमः ॥ गङ्गा ॥
 धनाय ॥ पुष्पा नीका
 दाय ॥ रुमि ॥ पुष्पा नीका
 ॥ कुरु कुरु ॥ अय वि
 तुष विष्णु य विष्णु वास
 की वरुणा गङ्गा यिका ॥

स

वसिष्ठ

यत्तु

ॐ नमः

गङ्गा

३

ॐ नमः

पागुर्यप४४यस्य४३॥ वाः
 का॥ अमृकलमगुअमृका
 धस॥ साम्बसनीक४३ः
 ॥ नमंनु सोदकपाय
 नियु॥ ३॥ पागुअहयि
 अ॥ वाहय३॥ पागुपुथ
 स॥ ३॥ पागुनियोजन
 स्यम॥ पागुन३॥ वा
 लादन॥ स॥ ३॥ पागुपुथ
 स॥ ३॥ ॥ हस्तार्थ
 स॥ ३॥ ॥ प्रस्यर्थ३॥ वा
 गुमं॥ ग३॥ ॥ तिपिरपा
 गुसा॥ न३॥ यक्रमानवाक
 न॥ हस्तार्थ३॥ वंद
 न॥ ३॥ वन्दन॥ स॥ ३॥ य
 स्थायवीतपुथ॥ स॥ ३॥
 पुथ॥ स॥ ३॥ य॥ स॥ ३॥
 अ॥ गुग॥ ३॥ ॥ दमा
 नमा॥ द॥ व॥ स॥ पु॥ स॥ ग॥ स॥

वा

ना

यथादायमानयभययमाननवा

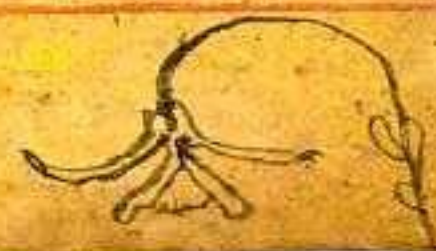
यो॥ य्यागि॥ न॥ न॥ दि॥ क॥ स॥
 न॥ अ॥ वा॥ य॥ अ॥ ति॥ यि॥ म॥ स॥
 रु॥ स॥ व॥ द॥ न॥ य॥ स॥ य॥ वी॥ त॥
 पु॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ पु॥ थ॥ न॥ म॥ दा॥
 य॥ न॥ म॥ ४॥ अ॥ गु॥ ग॥ न॥ अ॥ अ॥
 द्यो॥ पु॥ डा॥ वि॥ क॥ न॥ ग॥ स॥
 य॥ प॥ नि॥ पु॥ ह॥ अ॥ सु॥ ३॥
 अ॥ व॥ स॥ क॥ ल्य॥ ४॥ वि॥
 स्या॥ द॥ व॥ स॥ व॥ अ॥ म॥ न॥ य॥
 द॥ व॥ स॥ अ॥ न॥ स॥ क॥ ल्यो॥ वि॥ द॥
 सु॥ ॥ पि॥ ह॥ पि॥ ता॥ म॥ ल्य॥
 पि॥ ता॥ म॥ ह॥ स॥ अ॥ न॥ स॥ क॥
 ला॥ दि॥ डा॥ सु॥ ॥ न॥ दि॥ क॥ स॥
 ना॥ य॥ अ॥ वा॥ य॥ य॥ अ॥ न॥ स॥
 क॥ ल्यो॥ दि॥ डा॥ सु॥ ॥ अ॥ य॥ दि॥ ४॥
 वा॥ ३॥ ॥ अ॥ मृ॥ क॥ ल्य॥ म॥ अ॥
 अ॥ मृ॥ का॥ अ॥ स॥ स॥ म॥ न॥ स॥

हस्तार्थार्थार्थ

स्यात्

ना कश्चिद्विच्छेद
दियुर्वभूतसंकल्पम
किडमस्तु सुप्रभमस्तु
लाता तवलाता ततस्तु लाध
वैपत्रियुद्धमस्तु य
स्यादृष्टं तस्य अक्षय
मस्तु ॥ पितृपितामह
प्रपितामहस्यः अन्नसं
कल्पयुक्ताविभनं तः
सर्वयनियुद्धमस्तु ॥
अन्नसंकल्पयुद्धास्तु
अतिश्रितनदिकसना
यश्चाप्योक्तयः अन्नसं
कल्पयुक्ताविभनं तः
सर्वयनियुद्धमस्तु ॥
अन्नसंकल्पयुद्धास्तु
॥ **रामकृष्ण** नमोऽयं

अथाभामथ नामया क
लि कान्ति अक्षयिकायु
निधानावगीरुय सय
तामाददायका ॥ गं
या **हाय** पुनीसंययवि
मानिः अक्षयकालवृत्तः
विनं रूमोलिफजलर
सुयिह नीमाददायका
॥ **होम** ल **कृष्ण** कथावतय ॥
विश्वयिद्धासन्नपतिस्तित
यिह पितृमुगर्नस्य ॥
प्रपितामहपितृमुगर्नस्य
॥ **पितृ** कायनायागल
सतन ॥ **पितृ** यागसन्न
उपगीरुतां ॥ **पितृ** या
दायकय ॥ अन्न अक्षयक
ग्रदि को नसयितिल
पि



ति

३१

प्रविष्टं तस्मै स्वः ॥
 प्रविष्टा मह नाम प्रविष्टं
 तस्मै स्वः ॥ गगनमातु
 तितयशा पिरुशगो ॥ प्र
 ववत ॥ विष्टु शगस्व
 अशा प्रय स्माय ॥
 अस्व वसु स्या प्रय
 स्वः ॥ वका दशत्रु
 दुष्ट प्रय स्वः ॥ द
 दश ॥ इति स्य प्रय
 स्वः ॥ तिलादक
 पिरु पितामह प्र
 पितामह ॥ स्य ना
 प्रति लादका वस्व
 ॥ पर्वत ॥ चन्दन
 स्वः ॥ यशोवती गवा
 स्वः ॥ ॥ गगनाग ॥ इति

गगनाग यगु प्रय स्वः ॥
 रतुष्टा न स्वः ॥ कुल
 नासु प्रय वारिग नासु
 प्रय ववत ग ने मागे न ववपि
 रतुष्टा मादु दायका ॥ इति
 लप्रयता म्बुल प्रयदीयस
 एकल्यसिद्धिप्रसुप्त ॥
 ॥ कालान मह लदयका ॥
 लप्रयता मावत ॥ वा
 ॥ विष्टु दाना र्वा विष्टु प्र
 ॥ दशप्रय कासु प्राफमसु
 दाता प्रयका न ॥ सीनमसि
 दासु ॥ अहानागु मुसमसु
 पिरु पितामह प्रयितासु
 ससम ॥ अगु गवा वि ॥
 यलाक विष्टु ॥ कसु प्राफ
 मसु ॥ पिरु प्रयितासु यता

रुल

गय प्रयतासु रुतसु
 मसु ॥ ५